नाटक

नियम का फल

सहज, सरल, शिक्षाप्रद नाटक
कम समय में मंचन करने के लिए।

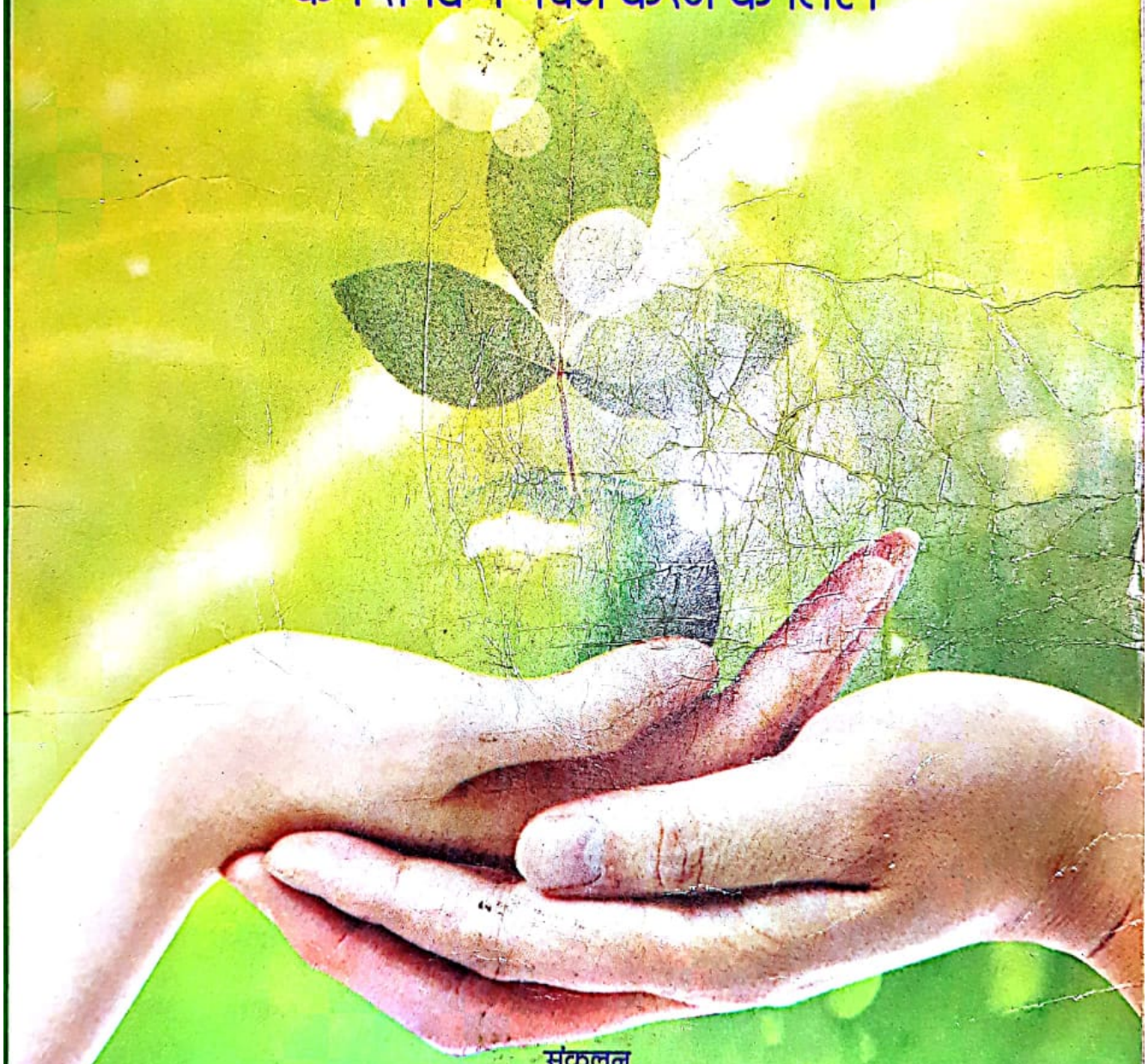

संकलन
ब्र. नीतू दीदी
उदासीन आश्रम, इंदौर

Scanned by CamScanner

(नाटक)

नियम का फल

सहज सरल शिक्षाप्रद नाटक
कम समय में मंचन करने के लिए।

संकलन
ब्र.नीतू दीदी
उदासीन आश्रम ,इन्दौर

प्रकाशक
ज्ञान कुटी साहित्य केन्द्र
ज्ञान कुटी सिद्धनगर, पुरवा
नागपुर रोड, जबलपुर (म.प्र.)
फोन-0761-2671655
मो.-09425129377,09424312931

सहयोग राशि रु. 15/-

Scanned by CamScanner

विषय सूची

क्र.	सूची	पृष्ठ क्रमाक
1.	रात्री भोजन त्याग	1
2.	नियम का फल	7
3.	प्रतिज्ञा	16
4.	दहेज	37
5.	विवाह	41

नाटक (1)

रात्री भोजन त्याग

पात्र

किसान – धनिया

पत्नी – रामप्यारी

(दृश्य –1)

(किसान खेत पर काम करते हुए, खेत पर हल चला रहा है।)

पार्श्वगायन – मेरे देश की धरती सोना उगले का संगीत चल रहा है।

किसान दोपहर होते ही घर लौट कर आता है और अपनी पत्नि रामप्यारी को आवाज लगाता है।

किसान : रामप्यारी ओ रामप्यारी, पता नहीं कहाँ चली जाती है, ये नहीं पति थका हारा घर पर आया है उसका ध्यान रखे, रामप्यारी, ओ रामप्यारी।

पत्नि : क्यों इतनी जोर से चिल्ला रहे हो, अरे मैं काम कर रही थी, कोई आराम नहीं कर रही थी, पर तुम तो ऐसे चिल्लाते हो, ऐसा लगता है कि घर में भूकंप आ गया हो, क्या बात है, क्यो चिल्ला रहे थे।

किसान : अरे जब भी बोलती, शेरनी जैसी दहाड़ती है कभी तो प्रेम के दो बोल, बोल लिया कर।

पत्नि : तुम्हे प्रेम से मीठा बोलने की पड़ी है, अरे ये बच्चो को संभालते–संभालते मेरा तो जीवन ही नरक बन गया है, तुम्हे देखूँ क्या ये आठ–आठ बच्चो को संभालू।

Scanned by CamScanner

पति : तुमसे तो कुछ बोलना बेकार है, कहना बेकार है, पता नहीं किस मनहूस लग्न में तुमसे शादी की थी, मेरी तो किस्मत ही फूट गई।

पत्नि : किस्मत तुम्हारी नहीं मेरी फूटी है, जो मेरे पिता ने तुमसे मेरीशादी कर दी, जब से ब्याह कर आई हूँ, काम ही काम कर रही हूँ दो पल चैन से बैठने को भी नसीब नहीं होता।

(हास्य :- शायद पण्डित ने रिश्वत लेकर कुण्डली मिला दी होगी इन दोनो की)

पति : अरे भाग्यवान ! तू तो बुरा मान गई, मेरी ही गलती है मुझे तुझसे ऐसा नहीं कहना चाहिए था अच्छा चलो गुस्सा थूँक दो और जरा मुस्करा दो।

पत्नि : बस रहने दो, पहले तो दो बाते सुना देते हो फिर मीठी-मीठी बाते करते हो, चलो जाओ हाथ-मुँह धो लो। मैं खाना लगा देती हूँ फिर तुम्हे खेत पर भी जाना है।

(किसान की पत्नि किसान को भोजन की थाली लगाती है और किसान भोजन करने बैठता है, जैसे ही भोजन का ग्रास मुँह में रखता है।)

किसान : अरे, यह क्या सब्जी में इतनी मिर्ची, वैसे पहले ही क्या तू कम तेज थी जो इतनी मिर्ची डाल दी सब्जी में, बताओ अब मैं क्या खाँऊ, इतनी जोर से भूख लगी थी.....।

पत्नि : हाँ सारी लगती मेरी ही है, सुबह से तुम सबके लिए कलेबा बनाओ, फिर दोपहर की रोटी, फिर शाम का भोजन ऊपर से ये आठ-आठ बच्चो को पालना, और तुम्हारी जली-कटी सुनना यही मेरे फूटे भाग्य में लिखा है।

किसान : बस अब अपना ये दुखड़ा रोना बंद करो, मैं खेत में जा रहा हूँ, शाम को थोड़ा ध्यान से भोजन पकाना, मिर्च बगैरा मत ज्यादा डाल देना। मैं तो सोच रहा था, कि आज मेरा जन्मदिन है तो मेरी घरवाली ने कुछ अच्छा मेरी पंसद का बनाया होगा पर यहाँ तो किसी को याद ही नहीं है कि आज मेरा जन्मदिन है, ऊपर से ये मिर्ची का खाना।

पत्नि : तुम्हे तो अपना जन्मदिन याद रहता है। मुझे पहले से बता देते, मैं भी घर के काम-काज में सब भूल जाती हूँ।

पति : चलों ठीक है, मैं खेत पर जा रहा हूँ आज खेत पर ज्यादा काम है आते-आते रात हो जायेगी, तुम ऐसा करना शाम को बैगन का भुर्ता बना लेना, तुम्हारे हाथ का बहुत अच्छा लगता है, कई दिन हो गये खाया नहीं है।

पत्नि : क्या ? आज रात को भोजन करोगे, घर में मिट्टी का तेल भी नहीं है, कितनी बार कहाँ लाने को पर तुम्हे तो हमारी कोई बात सुनाई ही नहीं पड़ती, राज को अंधेरा हो जाएगा, रोशनी करने को घर में तेल भी नहीं है।

पति : फिर शुरु हो गई, मैं तो कुछ कह ही नहीं सकता, तुम पड़ोस से आज का काम चलाने के लिए तेल ले लेना, फिर मैं कल बाजार से याद से ले आऊँगा चलो। जरा मुस्कुरा दो, वैसे रोशनी की क्या जरुरत है, तुम्हारे चेहरे की सुंदरता की रोशनी के आगे तो सारे प्रकाश फीके पड़ जाये।

पत्नि : चलो हटो, अब रहने भी दो, बस मौका मिला तो मीठी-मीठी बाते बनाने लगे।

Scanned by CamScanner

पति : अरे, मैं ठीक ही कह रहा हूँ कल रामू भी कह रहा था, कि तुम्हारी इतनी सुंदर बीबी है तुम उसका ध्यान नहीं रखते, देखो रामप्यारी यह घर गृहस्थी के काम तो लगे ही रहते है, थोड़ा अपना भी ध्यान रखा करो, देखो ये प्यारा सा चेहरा कैसे मुरझा गया है।

पत्नि : अब जाओ, खेत पर नहीं जाना क्या ? जल्दी जाओ जल्दी आ जाना मैं आपके लिए बैगन का भुर्ता बना कर रख दूँगी।

पति : अरे ! बनाकर नहीं रखना, मैं आऊ तभी गर्म बना देना।

पत्नि : देखो मैं शाम को स्वाध्याय में जाती हूँ वहाँ पर पण्डित जी ने बताया था रात्रीभोजन न करना न रात्री में बनाना बहुत पाप लगता है, माँस खाने के दोष के बराबर दोष लगता है।

पति : अरे, फिर उपदेश देने लगी, मैं थोड़े ही रोज खाता हूँ, कभी-कभी खा लेता हूँ।

पत्नि : चाहे एक दिन खाओ, चाहे रोज खाओ पाप तो पाप है न मैं नहीं बनाऊँगी ?

पति : अरे सुनो तो, देखो मैं तुम्हारा पति हूँ और आज मेरा जन्मदिन भी है, तुम मेरे लिए इतना नहीं कर सकती, मैं कोई व्यंजन बनाने के लिए नहीं कह रहा, बस बैगन का भुर्ता बनाने के लिए कर रहा हूँ।

पत्नि : ठीक है मे बैगन का भुर्ता और बाजरा की रोटी बना दूँगी। तुम जल्दी आने की कोशिश करना।

पति : ठीक है मैं जाता हूँ।

(किसान चला जाता है। अब रात्रि का दृश्य रामप्यारी अंधेरे में चुल्हे पर भोजन पका रही है इतने में धनिया किसान खेत से लौट

कर आता है, आते हुए रात हो जाती है, जैसे ही घर में कदम रखता है तो चारो तरफ अंधेरा दिखता है बस चौके से चिमनी का थोड़ा थोड़ा उजाला हो रहा है)

किसान : अरे ! लगता है रामप्यारी को मिट्टी का तेल थोड़ा ही मिला होगा इसी लिए चिमनी भी धीमी जल रही है।

किसान : रामप्यारी ! मैं आ गया, बहुत तेज भूख लगी है बैगन का भुर्ता और बाजरे की रोटी बन गई होगी, जल्दी परोस दो, मैं तब तक हाथ-मुँह धो कर आता हूँ।

पत्नि : अरे धीमे बोलो मुश्किल से बच्चो को सुलाया है, भोजन तैयार है आप आ जाइये।

(थाली लगा देती हूँ। और किसान मुँह हाथ धोकर भोजन करने बैठ जाता है।)

किसान : यह कैसा भुर्ता बैगन का बनाया है इतना कड़क टूट ही नहीं रहा है।

पत्नि : देखो जी, अब मुझसे कुछ मत कहना कह देती हूँ देखो अंधेरे में जैसा बना वैसा बना दिया अब चुपचाप खा लो।

पति : अरे मैं झूठ नहीं कह रहा, मुझे पता है तुमने तो अच्छा बनाया होग, पर यह सही में नहीं टूट रहा है देखो यह टूट ही नहीं रहा।

पत्नि : अरे मैंने तो बैगन का भुर्ता ही बनाया था, पर यह तो सच में नहीं टूट रहा, हे भगवान यह क्या बन गया, मैंने कहाँ था, रात्री में भोजन नहीं खाना चाहिए, न बनाना चाहिए, पर तुम मेरी एक भी नहीं सुनते हो।

Scanned by CamScanner

पति : अरे, अब अपना दुखड़ा बाद में सुनाना पर पहले चिमनी लाओ देखे तो प्रकाश में यह है क्या ?

(पत्नि चिमनी लाती है, और जैसे ही चिमनी के प्रकाश में देखते है)

किसान : अरे ! रामप्यारी ये तूमने क्या पका डाला ये बैगन नहीं ये तो मेढ़क है।

(दोनो थाली छोड़ खड़े हो जाते है और डर के कँपने लगते है।)

किसान : हें भगवान ! यह मैंने कैसा पाप कर डाला अब मेरा क्या होगा, मुझसे इतना बड़ा पाप हो गया, रामप्यारी तुम बार–बार मुझे समझाती थी कि रात्री में भोजन न करना चाहिए , न बनाना चाहिए, पर मैं ही अज्ञानी बना रहा, और तुम्हारी एक भी न सुनी ?

पत्नि : आज मेरे हाथो पंचेन्द्रिया जीव की हिंसा हो गई चलो अपन मंदिर चलकर भगवान के सामने जाकर नियम लेगे न रात्री भोजन करेगे, न बनायेगे।

(आप भी समझ चुके होगे रात्री भोजन में कितनी हिंसा होती है आप भी रात्री भोजन का त्याग जरुर करना।)

समाप्त

नाटक (2)

नियम का फल

पात्र

1. मुनि महाराज
2. महाराज
3. रानी
4. चंद्रकांता (राजकुमारी)
5. माधुरी (नागिन के वेश में)
6. सूत्रधार
7. कुछ श्रद्धालुजन

Scanned by CamScanner

सूत्रधार : (मंचन करते समय परदा खुलने के पूर्व सूत्रधार निम्नलिखित जानकारी श्रोताओं/दर्शकों को देंगे) बहुत समय पहले की बात है। जयपुर में राजा जिनदत्त राज्य करते थे। उनकी रानी जिनमती जैन धर्म में गहरी आस्था रखती थी पर राजा जिनदत्त को जैन धर्म में कोई विशेष रुचि नहीं थी। एक दिन नगर में कोई दिगंबर साधु आए। महारानी आग्रह करके राजा जिनदत्त को भी मुनि महाराज के पास ले गई। महाराज ने जिनदत्त को दो नियम दिलवाए जिनका पालन करने से उनका जीवन ही परिवर्तित हो गया। उन्हें मोक्ष की सीढ़ी दिखाई देने लगी। कौन से थे वो दो नियम, जिनका पालन करने से राजा का हृदय परिवर्तित हो गया, यही देखेंगे हम इस नाटक 'नियम का फल' में।

(दृश्य – 1)

(राजा – रानी बैठे हुए है)

रानी : राजन् हमारे नगर में मुनिराज पधारे है।

राजा : अच्छा, हमारे नगर में मुनिराज पधारे है।

रानी : हाँ महाराज हमें भी दर्शन करने चलना चाहिए।

राजा : रानी आप पुत्री के साथ दर्शन कर आओ।

रानी : क्या आप नहीं चलेंगे ?

राजा : हाँ रानी तुम्हें तो पता है राज्य व्यवस्था में बिल्कुल भी समय नहीं मिल रहा है।

रानी : पर राजन्। हमने सुना है अवधिज्ञान के धारी मुनिराज पधारे है, हमें साथ में दर्शन करनेचलना चाहिए।

राजा : ठीक है रानी, तुम कहती हो तो ठीक है हम साथ में दर्शन करने चलते है। चलो।

(दृश्य –2)

(मुनिराज के प्रवचन चल रहे है कुछ श्रावक बैठे हुए है राजा अपने परिवार के साथ महाराज श्री के दर्शन कर प्रवचन सुनने बैठ जाते है, प्रवचन सुनने के बाद राजा–रानी महाराज श्री को प्रणाम कर पूछते है हमारे कल्याण के लिए आप उपदेश दीजिए।)

रानी : (मुनि महाराज से) प्रभु, दुखों से भरे इस संसार रुपी सागर से पार होने का उपाय बताइये।

मुनि : बेटी, इस संसार में मनुष्य न तो कुछ लेकर आता है और न कुछ साथ लेकर जाता है। सब कुछ यहीं छोड़कर चला जाता है। बस जिस दिन यह बात उसके मन में बैठ जाएगी, उसी दिन से उसका कल्याण शुरु हो जाएगा। जरा सोचो, सबसे अच्छी गति मनुष्य गति है। यदि इतनी अच्छी गति में जन्म लेकर भोग विलास में जीवन गँवा दिया तो क्या किया। यही वह गति है जहाँ से मोक्ष प्राप्ति की सीढ़ी लगी हुई है।

मुनिराज : हे राजन् आपके सामने संकट आने वाला है।

राजा : कैसा संकट मुनिराज जी।

मुनिराज : घबड़ाइये नहीं, आप ऐसा करिए मैं आपको दो नियम देता हूँ उसका पालन कीजिए –

मुनि महाराज : पहला नियम है कि आपके घर में यदि ''कोई मेहमान आए तो आप उसका स्वागत करेंगे'', भले ही वो आपका शत्रु ही क्यों न हो। दूसरा नियम ''क्रोध में कोई निर्णय नहीं लेगे।'' जब भी आपको क्रोध आए, तो आप मेरे नियम को याद करके कुछ क्षण तक रुक जाइएगा।

राजा : अरे महाराज ! ये तो बहुत सरल नियम है। इसका पालन करने में हमें कोई परेशानी नहीं होगी।

Scanned by CamScanner

राजा : रानीजी ! गजब हो गया।

रानी : क्या हुआ महाराज ! आप इतना पेरशान क्यों हैं ?

राजा : रानीजी ! आज मेरे जीवन का अंतिम दिन है।

रानी : क्या कह रहे हैं महारज ..... ! ऐसी अशुभ बातें मुँह से न निकालिये।

राजा : नहीं रानीजी ! आज प्रातः काल मेरे स्वप्न में एक महापुरुष आए। उन्होंने मुझसे कहा कि राजन आज रात्रि में ठीक बारह बजे महल के सामने वाली पहाड़ी से एक नागिन महल के अंदर प्रवेश करेगी और तुम्हें डस लेगी। आप तो जानती हैं, सुबह का स्वप्न झूठा नहीं होता।

रानी : (रोते हुए) महाराज, अब क्या होगा ?

राजा : देखिये रानीजी, हिम्मत से काम लीजिये। हम लोगों की केवल एक ही बेटी है। यदि यह बात किसी पड़ोसी राजा को मालूम हो गई तो वह तुरंत हमारे राज्य पर आक्रमण कर देगा। अतः आप कोई अच्छा सा वर देखकर पुत्री के हाथ पीले करके दामाद को राज्य का उत्तराधिकारी बनाकर बाद में सबको मेरी मृत्यु का समाचार दीजियेगा।

रानी : हे भगवान ! (रोते हुए)ये क्या हो गया ? ये तुम मेरी कैसी परीक्षा ले रहे हो ?

रानी : (उठकर), महाराज, ऐसा करिये कि जैसे ही नागिन पहाड़ी से निकले, आप उसे तुरंत मरवा डालिये।

राजा : रानीजी, आप कैसी बातें कर रही हैं ? रानी आप भी तो वहीं थीं जब मुनि महाराज ने कहा था कि किसी भी जीव को मारना पाप है। फिर वो तो मेरा मेहमान है। मैंने नियम भी लिया है कि यदि शत्रु भी मेरे यहाँ आएगा तो मैं उसका स्वागत करूँगा। (रानी रो रही है)

राजा : रानीजी, समय बहुत कम है। हिम्मत से काम लीजिये। देखिये, ये बात किसी को पता न चले।

(रानी रोते हुए चली जाती है। राजाजी ताली बजाते हैं।)

प्रहारी : आज्ञा दीजिये महाराज।

राजा : मंत्रीजी को तुरंत बुलाइये।

प्रहरी : जो हुक्म महाराज।

मंत्री : महाराज की जय हो, क्या हुक्म है महाराज ?

राजा : मंत्रीजी, आज रात्रि में ठीक बारह बजे महल के सामने वाली पहाड़ी से एक नागिन महल में आएगी। आप सारे रास्ते में उसके लिए जगह-जगह दूध के कटोरे रखवा दीजिये। बीन बजवा दीजिये। ध्यान रहे, वो हमारी मेहमान है।

मंत्री : (आश्चर्य से) महाराज, नागिन और मेहमान ? ये कैसी मेहमान है ?

राजा : मंत्रीजी, आपसे जो कहा जा रहा है उसे करिये। ध्यान रहे उसे रास्ते में कोई छेड़े नहीं, न परेशान करे।

(मंत्री अजीब सा मुँह बनाकर चला जाता है। मंच पर दो-ती कटोरों में दूध रखवा दिया जाए। एक बीन बाला बैठा बीन बजा रहा है। नागिन पहाड़ी से निकलती है। वह पहाड़ी से नीचे उतरकर महल की ओर बढ़ रही है। नागिन दूध पीती है और बीन की आवाज पर झूमती है। नागिन की अंतरात्मा की आवाज)

माधुरी (नागिन): हे भगवान ! मैं कहाँ आ गई हूँ, मैं किसी गलत जगह पर तो नहीं आ गई हूँ। यहाँ पर मेरा कैसा भव्य स्वागत हो रहा है। यहाँ के राजा तो मैं डँसने आई हूँ।

(वह पुनः झूमती है। पुनः अंतरात्मा की आवाज....)

माधुरी (नागिन): इस राजा को तो मैंने सपने में अपने आने का कारण बता दिया था, फिर मेरा इतना स्वागत ? नहीं

Scanned by CamScanner

नहीं.... ऐसे राजा को मैं कदापि नहीं डँस सकती।

(नागिन लौटने लगती है। वह कुछ दूर तक जाती है कि एक आकाशवाणी होती है।)

परदे के पीछे से आती आवाज : ये तू क्या कर रही है ... ? तुझे राजा को डँसने के लिए भेजा गया है....। तू देवों के सामने कौनसा मुँह लेकर जाएगी ...? तू अपने कर्तव्य से विमुख हो रही है ...। वो फिर महल की ओर चलती है। पुनः दूध पीती है तथा नाचती है।

माधुरी : नहीं.... मैं ऐसे देवता तुल्य राजा को नहीं डस सकती। मैं क्या करूँ ? ठीक है, मैं देवताओं को अपना मुँह नहीं दिखा सकता। मैं अपनी जान तो दे सकती हूँ।

(नागिन सिर पटक-पटक कर जान दे देती है। मंत्री दौड़कर अंदर जाता है और राजा के साथ मंच पर आता है।)

मंत्री : महाराज गजब हो गया, आपके मेहमान ने सिर पटक-पटक कर जान दे दी।

राजा : अरे नागिन ने अपनी जान दे दी है ?

मंत्री : हाँ महाराज।

राजा : ठीक है मंत्रीजी, आप ससम्मान उसका अंतिम संस्कार करवा दीजिये।

(मंच पर से सारा हटाया जाता है।) पर्दा

राजा : हे प्रभु....! ये कैसा चमत्कार है....? आज तूने मुझे नया जीवन दिया है। मैं महल में जाकर रानी को खबर देता हूँ।

(मंच पर रानी पुत्री के साथ खड़ी है तथा पुत्री से कह रही है....)

रानी : बेटी, आजसे तू राजकुमारों के वस्त्र पहनेगी, राजकुमारों की तरह बातें देख बेटी, किसी को इसकी खबर नहीं होनी चाहिए। चल अब राजकुमार के वस्त्र पहिन ले। पर्दा

(वह मंच से हटती है और पुनः राजकुमार को लेकर प्रवेश करती है।)

रानी : हाँ, अब तू बिल्कुल राजकुमार लग रही है। वो उसको प्यार करती है गले लगा लेती है तथा उसका माथा चूमती है। तभी राजा का प्रवेश।

(रानी को इस मुद्रा में देखकर राजा आगबबूला हो जाता है और कहता है...)

राजा : ओफ हो, मेरी पत्नी इतनी कुलटा है ? मेरी मृत्यु का समाचार जानकर उसने पर पुरुष से संबंध स्थापित कर लिये !!

(वो क्रोध में आकर तलवार निकालकर मारने की मुद्रा में दौड़ता है कि अंतरात्मा की आवाज...)

परदे के पीछे से आवाज आती है : राजा जिनदत्त...! ये तू क्या कर रहा है .....? तूने तो क्रोध में कोई निर्णय नहीं करेगे नियम लिया है।

(राजा चौंकता है उसे मुनि महाराज का दिया वचन याद आ जाता है वह शांत हो जाता है रानी धीरे-धीरे मंच से जा रही है। राजा महल में जाकर आसन पर बैठता है।)

(रानी का महल में प्रवेश)

रानी : (राजा को देखकर) अरे महाराज ! आप यहाँ ?

राजा : हाँ मैं यहाँ। क्यों मुझे यहाँ नहीं होना चाहिए न ? आपको तो बहुत दुःख हो रहा होगा ?

रानी : महाराज, आप ये कैसी बातें कर रहे हैं ? आपने तो कहा था ....।

राजा : हाँ, मैंने जो कहा था वो नहीं हुआ। इसलिए आपको दुःख हो रहा है कि आपकी मनोकामना अब पूरी नहीं हो पाएगी।

रानी : महाराज, साफ-साफ बताइये। मैं कुछ समझी नहीं।

राजा : अब समझने के लिये रह ही क्या गया है ?

रानी : (महाराज के माथे पर हाथ रखकर) महाराज, आपकी तबीयत तो ठीक है ?

Scanned by CamScanner

राजा : हाँ, ठीक है। (हाथ झटककर) आज पहली बार मेरी तबीयत बिल्कुल ठीक है।

रानी : महाराज, आप कैसी बहकी–बहकी बातें कर रहे हैं ?

राजा : वो पर पुरुष कौन था आपके कमरे में ? जिसे आपने अपने गले लगा रखा था और जिसका माथा चूम रही थी ?

रानी : (आश्चर्य से) मेरे कमरे में पर पुरुष ?

राजा : (क्रोध से) ये मेरे सवाल का उत्तर नहीं है रानी !

रानी : मेरे कमरे में मेरी बेटी के सिवाय और तो कोई नहीं था।

राजा : (हँसकर) मैं पागल नहीं हूँ जो अपनी बेटी को न पहचानूँ।

रानी : महाराज, आप स्वयं चंद्रकांता से पूछ लीजिये। बेटी को आवाज लगाती है चंद्रकांता sss

चंद्रकांता : (अंदर आकर) क्या है माँ, प्रणाम पिताजी।

राजा : (पुरुष रुप पुत्री देखकर) ये मेरी पुत्री चंद्रकांता है।

रानी : हाँ महाराज, आप भी इसे देखकर धोखा खा गए ना। बिल्कुल राजकुमार जैसी लग रही है आपकी बेटी।

राजा : हे भगवान, अभी मुझसे कितना बड़ा अनर्थ हो जाता ? ये सब मुनि महाराज के दिलाए नियम का फल है। धन्य हैं दिगंबर साधु, जिन्होंने हमें नया जीवन दिया। हमारा घर उजड़ने से बचा लिया। रानीजी, यदि उनके सिर्फ दो नियम पालन से मुझे इतना लाभ मिला तो यदि मैं उन जैसा ही बन जाऊँ तो शायद मेरे जीवन का कल्याण हो जाएगा।

(अपना मुकुट उतारकर रानी को देते हुए....)

रानीजी, अब आप मुझे आज्ञा दें। मैं महाराज के पास दीक्षा लेने जा रहा हूँ।

रानी : महाराज ! मैं तो कबसे इस दिन की प्रतीक्षा कर रही थी। मैं भी आपके साथ चलूँगी और आर्यिका दीक्षा लूँगी।

चंद्रकांता : पिताजी, मैं भी आपके साथ चलूँगी। मैं भी आर्यिका दीक्षा लेकर तपस्या करूँगी।

रानी : नहीं अभी तेरी उम्र ही कितनी सी है ? (राजा की ओर उन्मुख होकर) महाराज ! क्यों न हम अपनी बेटी का पहले विवाह कर दें और फिर दामाद को राजतिलक करके फिर तपस्या करने चलें ?

राजा : हाँ रानीजी ! यह ज्यादा ठीक रहेगा।

(तत्पश्चात राजकुमार के साथ विवाह कर दिया जाता है) **समाप्त**

इस प्रकार नाटक समाप्त होता है

शिक्षा - इस नाटक की शिक्षा मिलती है कि क्रोध को समाप्त करना चाहिए, गुस्से में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए

सामग्री

(1) राजा, रानी, राजकुमारी, सैनिक, जनता, मंत्री, पुरोहित, राजकुमार की ड्रेस, श्रद्धालुओं की ड्रेस। 2 ड्रेस सैनिकों के
(2) एक कालीन एवं पीढ़ी (2 पीढ़े व 2 घोड़े के लिए)
(3) दो कुर्सियाँ राजा रानी के लिए तथा 4 कुर्सियाँ सभा में बैठने वालों के लिए।
(4) डीवीडी प्लेयर टीवी के लिए तथा म्यूजियम विभिन्न प्रकार की ध्वनियाँ निकालने के लिए
(7)

Scanned by CamScanner

नाटक (3)

प्रतिज्ञा

पात्र

कमल श्री
कमलश्री के माता–पिता (सेठानी)
नौकर
मुनिराज
पंडित
हेमदत्त
हेमदत्त के माता–पिता (सेठ–सेठानी)
सपेरा
सौधर्म इंद्र
देव
राजा
मंत्री

(दृश्य –1)

(स्थान : सेठ पदमदत्त का घर, सेठजी और सेठानी बैठे हुए बातचीत कर रहे हैं।)

सेठानी : नाथ, आज मेरी बाईं भुजा फड़क रही है।

सेठजी : यह तो शुभ शगुन है प्रिये, किसी से भेंट होगी।

सेठानी : किसी से भेंट होगी ? किससे भेंट होगी ?

सेठजी : अपने किसी प्रिय से।

सेठानी : मुझे तो ऐसा ही प्रतीत होता है स्वामी, कहीं मेरी बेटी कमलश्री ही न आ रही हों।

सेठजी : (कुछ सोचते हुए) आज कौन सा दिन है ? कौन सी तिथि है ?

सेठानी : मंगलवार है, शुभ पंचमी(तभी कमलश्री आ जाती है)

कमलश्री : माताजी, प्रणाम।

सेठानी : (आशीर्वाद देती है) सुखी हो, दीर्घायु हो। (सेठानी कमलश्री को गले लगा लेती है।)

कमलश्री : पिताजी प्रणाम।

सेठनी : (सिर पर हाथ फेरते हुए) तुम आ गई बेटी ?

(उसी समय नौकर आकर कहता है)

नौकर : श्रीमंत, नगर में मुनिराज का आगमन हुआ है। सभी जन वंदना को जा रहे हैं।

सेठजी : (प्रसन्नता से) मुनि महाराज पधारे हैं ? चलो, हम सब भी उनके दर्शन करने चलें। चलो प्रिये ! आओ बेटी।

(स्थान : मंदिर का चौक, मुनिराज काष्ठ के आसन पर विराजमान हैं। सामने ऊँची चौकी रखी है जिससे उनका नाभि से ऊपर का शरीर ही दिखाई दे रहा है। पिच्छी, कमंडल रखे हैं। सामने कुछ

Scanned by CamScanner

भक्तजन बैठे हैं। सेठ पदमदत्त परिवार सहित आते हैं, नमस्कार करते हैं और मुनिराज के समीप बैठ जाते हैं।)

मुनिराज : धर्मवृद्धि हो।

सेठजी : (विनय पूर्वक पूछते हैं) मानव जीवन कैसे सफल बनाया जा सकता है महाराज ?

मुनि : नियम पालन करने और व्रत रखने से यह जीवन सफल बनाया जा सकता है।

सेठानी : कौन-कौन से नियम या व्रत लिये जा सकते हैं मुनिवर !

मुनिराज : देव दर्शन करने का, देव पूजन करने का, दान देने का, संयम पालन करने का और स्वाध्याय करने का नियम लिया जाता है भद्रे ! हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह का यथाशक्ति त्याग करना तथा रात्रि में भोजन नहीं करना व्रत कहलाता है कल्याणी !

सेठजी : सत्य है महाराज, मैं आज से नित्य देव दर्शन का नियम लेता हूँ।

सेठानी : मैं भी देव दर्शन करने का नियम लेती हूँ।

भक्तजन : हम भी दर्शन व पूजन करने का नियम लेते हैं महाराज।

कमलश्री : मैं भी रात्रि भोजन त्याग करने का आजीवन व्रत लेती हूँ महामुनि !

मुनिराज : सुंदर....! शुभे सुंदर !!

कमलश्री : मैं आज से आपके सामने यह प्रतिज्ञा करती हूँ कि मैं रात्रि में भोजन नहीं करूँगी।

मुनिराज : धर्म तेरा सहायक होगा भद्रे !

कमलश्री : धर्म का कुछ स्वरुप मुझे और समझाइये महात्मन् जिससे मैं अपने व्रत पर अटल रह सकूँ।

मुनिराज : भद्र बालिके ! सुन। जो इस जीव को, संसार के

दुःखों से छुड़ाकर उत्तम सुख प्राप्त कराता है, वही धर्म है। शुभ कर्म करने से जीवन मंगलमय बनता है। यह जीव जब जगत के भ्रम जाल से छूटकर आत्म कल्याण की ओर अग्रसर होता है तभी सुखी होता है।

कमलश्री : ऋषिश्वर, आप धन्य हैं। आपने आज मुझे आत्म कल्याण का यह सुगम पथ बतलाया है।

(परदा गिरता है।)

(स्थान : सेठ पदमदत्त का घर, एक ओर सेठानी कुछ उदास बैठी है। सेठजी बाहर से आते हैं व सेठानी को देख कर पूछते हैं।)

सेठजी : प्रियेआज तुम उदास नजर आ रही हो, क्या बात है?

सेठानी : आप भी मेरी उदासी का कारण नहीं समझ पाए। मैं तो सोचती थी कि आप मेरी चिंता को स्वयं ही समझ जाएँगे। अपनी बेटी कलमश्री अब विवाह के योग्य हो गई है मुझे उसकी चिंता है, उसके लिए अच्छे योग्य वर की तलाश करनी चाहिए।

सेठजी : ठीक कहती हो तुम, मुझे अभी तक इसका ध्यान ही नहीं आया था। मैं अभी पंडितजी को बुलाकर उत्तम वर के लिए टीका भेजता हूँ।

नंदन.. नंदन.. (सेठजी नौकर को आवाज देते हैं)

नौकर : (उपस्थित होकर) आज्ञा हुजूर।

सेठजी : जाओ, शीघ्र ही पंडितजी को बुलाकर लाओ।

नौकर : जो आज्ञा।

(नौकर चला जाता है। कुछ देर में पंडितजी अपने पंडिताई वेश में पत्रा पोथी लिए आते हैं। सेठजी पंडितजी को देखकर अभिवादन करते हैं।)

सेठजी : जय जिनेन्द्र पंडितजी महाराज ! आइये विराजियो

पंडितजी : सुखी रहो सेठजी ! कहो आज मुझे कैसे याद किया ?

सेठजी : आज आपके योग्य कार्य है।

Scanned by CamScanner

पंडितजी : क्या सेठजी ?

सेठजी : मेरी बेटी कमलश्री अब विवाह योग्य हो गई है। उसके लिए सुंदर वर और अच्छा घर ढूँढकर कहीं संबंध तय करवा दीजिए।

पंडितजी : करूँगा काम अपना जानकर, निश्चिन्त हो जाएँ। चलूँगा अब मुझे कुछ दक्षिणा तो आप दिलवाएँ॥

सेठजी : (हँसकर) अरे पंडितजी ! रहे आखिर पंडित के पंडित ही, क्या मैं आपकी दक्षिणा नहीं देता जो आप पहले ही माँग रहे हो।

(सेठजी पंडितजी को दक्षिणा देते हैं। दक्षिणा लेते हुए हँसकर पंडितजी जय जिनेन्द्र कहते हैं।)

पंडितजी : सेठजी, यों तो मुझे आप पर पूर्ण विश्वास है, किंतु बड़े लोग कुछ ऐसे कह गए हैं –

दान घूस दक्षिणा। पीछे माँगे कुच्छे ना ॥

(दोनों हँसते हैं। हँसते हुए पंडितजी खड़े होकर कंधे पर खुर्जा लटकाए रास्ते पर चले जा रहे हैं और अपने आप बड़बड़ाते जा रहे हैं)

पंडितजी : बहुत परेशान हूँ। कहीं अच्छा घर–वर नहीं मिलता। दोनों ही बातें भव्य होनी चाहिए। सुंदर वर भी हो, वैभवशाली घर भी हो। चलूँ। अब और आगे देखूँ। इस बार महा मालव जाऊँगा।

(पंडितजी चलते–चलते एक नगर के समीप पहुँचकर किसी जाते हुए नागरिक से पूछते हैं।)

पंडिजती : बंधु, कौनसा नगर है यह ?

नागरिक : अवंतिकापुरी है यह श्रीमान !

पंडिजती : (साश्चर्य) अवंतिका यानी उज्जयिनी ?

नागरिक : हाँ महोदय !

पंडितजी : श्रीमान क्या आप मुझे यहाँ के किसी पुत्रवंत, श्रीमंत का परिचय दे सकते हैं ?

नागरिक : (कौतूहल से) पुत्रवंत श्रीमंत, तब क्या कोई संबंध लाए हैं महाराज ?

पंडितजी : आपका अनुमान सत्य है।

नागरिक : तब आप यहाँ के सबसे समृद्ध, यशस्वी सेठ वृषभदत्तजी के यहाँ पहुँचिये,उनका पुत्र हेमदत्त रुपवान और सुयोग्य है।

पंडितजी : तनिक मुझे उनके भवन के पथ का संकेत कर दीजिये। क्योंकि मैं यहाँ से अपरिचित हूँ।

(पंडिजजी नागरिक के साथ चल देते हैं। तभी सामने वृषभदत्त आते नजर आते हैं।)

नागरिक : आप बड़े भाग्यवान हैं, देखो सामने से सेठ वृषभदत्त ही आ रहे हैं।

(दोनों समीप पहुँचकर सेठ साहब को अभिवादन करते हैं।)

दोनों : यह जिनेन्द्र सेठ साहब !

सेठजी : जय जिनेन्द्र महाशयो !

पंडितजी : मैं कंकनपुर से आ रहा हूँ। श्रीमंत सेठ पदमदत्तजी की अत्यंत गुणवती सुशील कन्या के लिए सुयोग्य वरकी कामना लेकर आपके समीप उपस्थित हुआ हूँ।

सेठजी : तब मुझ पर कृपा कर मेरे साथ मेरे अतिथि बनकर मेरे घर पधारिये।

पंडितजी : (प्रसन्न होकर) धन्य हो लक्ष्मी पुत्र।

सेठजी : (पंडितजी से) आइये, मेरे साथ आइये।

(पंडितजी नागरिक को सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं, फिर पंडितजी को साथ लेकर अपने प्रासाद की ओर आते हैं व एक भवन कीओर इशारा कर कहते हैं)

सेठजी : गुरु महाराज ! आप मेरे इस अतिथि भवन में विश्राम करिये। मैं हेम की माँ को यह शुभ समाचार सुना दूँ।

सेठजी : हेम की माँ...! ओ हेम की माँ ....।

Scanned by CamScanner

सेठनी : (अंदर से बाहर आती हुई) क्या है हेम के पिताजी?

सेठजी : अरे भई, अपने हेम का कंकनपुर से संबंध आया है।

सेठानी : (प्रसन्न होकर) सच।

सेठजी : सोलह आने सच प्रिये। पंडितजी अपने अतिथि भवन में ठहरे हुए हैं। अब तुम्हारी अनुमति की देर है।

सेठानी : मेरी तो यह बहुत दिनों से अभिलाषा है किंतु हेम की अनुमति भी ले लीजिये।

सेठजी : हाँ ठीक कहती, हो, बुलाओ उसे। उसकी अनुमति भी आवश्यक है।

सेठानी : (पुकारकर) हेम! बेटा हेम !!

हेम : जी माताजी (कहता हुआ वहाँ आ जाता है।)

सेठानी : बेटा, तुम्हारे पिताजी तुम्हारा गृहस्थ जीवन आरंभ कर रहे हैं। क्या सम्मति है तुम्हारी ?

हेम : माँ, जैसी आपकी और पिताजी की आज्ञा, होगी पालन करूँगा।

सेठजी : कन्या बहुत ही गुण सम्पन्न है।

सेठानी : और कन्या का पिता ?

सेठजी : नगर का सबसे बड़ा सेठ।

सेठानी : कृपण तो नहीं है, कहीं कन्या समर्पण कर केवल उसे ही खाली हाथ विदा तो न कर देगा ?

सेठजी : हे सेठानी तुम कैसी बात करती हो, हमारे घर में धन की क्या कमी है जो हम अपने बेटे की शादी में किसी से धन लेगे।

सेठानी : नाथ, आप मेरा अभिप्राय नहीं समझे। मैं धन की नहीं, सम्मान की इच्छुक हूँ। बिना उचित दहेज आए इस घर का सम्मान कैसे बढ़ेगा ?

सेठजी : अच्छा, मैं उस पंडित से यह सब निश्चित कर लेता हूँ।

(सेठानी पंडितजी से सब बात निश्चित करते हैं और वह कंकनपुर जाकर सेठ पदमदत्त को सभी बात बताते हैं व मिलकर शादी का मुहूर्त निकालते हैं। शादी होती है। शादी के पश्चात विदाई का दृश्य)

कमलश्री : (सिसकती हुई) माँ ...।

कवित्त : विदा माँ मत करो मेरी, मुझे मत दूर पहुँचाओ।
यहीं करने का पाला था, मुझे माँ यह तो बतलाओ॥

सेठानी : पुत्री, मैं विवश हूँ। यदि मेरा वश चलता तो मैं तेरी विदाई नहीं करती। दुनिया का यही चलन है। पर मेरी सीख हमेशा ध्यान रखना। भगवान तुम्हारा मंगल करेंगे।

कवित्त :

सभी से नेह तुम करना, कभी न तुम इतराना।
कभी मन में तनिक अभिमान मत लाना ॥
ससुर की सास की सेवा खुशी मन से सदा करना।
पति के साथ सुख से रहे, हमेशा फूलना फलना ॥

सेठानी : (हेमदत्त से) वत्स हेमदत्त ! आज कमलश्री को तुम्हारे साथ विदा कर रही हूँ। तुम सर्वदा इसका ध्यान रखना। अब आज से यह तुम्हारी हुई बेटा !

हेमदत्त : माताजी, आप किसी प्रकार की चिंता न करें। जैसा यह घर इसके लिए अपना है, वैसे ही वह घर भी इसके लिए अपना ही है।

(परदे के पीछे से आवाज : इस प्रकार कमलश्री विदा होकर अपने ससुराल आ जाती है और थोड़ी ही देर में अपने सौम्य व्यवहार से सबको आकर्षित कर लेती है)

(परदा गिरता है)

Scanned by CamScanner

(दृश्य –2)

(वृषभदत्तजी का मकान, रात्रि का प्रथम प्रहर। कमलश्री एक कमरे में बैठी हुई है। हेमदत्त की माँ पुकारती हुई आती है।)

सेठानी : बहू ऽऽऽ से ऽऽ दुल्हन ऽऽऽऽ।

कमलश्री : जी माताजी, (सेठानी को देखकर खड़ी हो जाती है)

सेठानी : (प्यार भरे स्वर में) बैठो बहू, मेहमानों के कारण मुझे तो अभी तक फुरसत ही नहीं मिली जो दो घड़ी तुम्हारे पास बैठ पाती।
(बैठते हुए) कमलश्री, भोजन तो तुमने कर लिया न ? (कमलश्री खामोश रहती है)

सेठानी : तुम चुप हो, मालूम होता है तुमने भोजन नहीं किया। मुझसे बड़ी भूल हुई। ठहरो, मैं अभी आती हूँ।

(सेठानी झपटकर जाती है व थोड़ी देर में हाथ में भोजन का थाल लेकर आती है।)

सेठानी : लो बहू, बैठो मेरे सामने। आज मैं ही तुम्हें अपने हाथों से भोजन कराऊँगी।

कलमश्री : माँ, आपने यह कष्ट क्यों उठाया। मुझे अब भोजन नहीं करना है।

सेठानी : (विस्मय से) क्यों बहू, तुम नाराज हो गई बेटी ? गलती तो मुझसे हो गई क्या तुम इसे क्षमा नहीं करोगी।

कमलश्री : माँ ! मैं नाराज होकर नहीं कह रही हूँ। वास्तव में मैं राज में भोजन नहीं करती। मैंने रात्रि भोजन का त्याग किया है।

सेठानी : हूँ.... (सिर हिलाकर) तो तुम रात में भोजन नहीं करती। पर इस घर में तो सदा रात में ही भोजन होता है। रात में भोजन करने में क्या खराबी है ?

कमलश्री : माँ ! शास्त्रों में रात्रि भोजन करने का निषधे है। इससे बहुत जीव हिंसा तो होती ही है, स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

सेठानी : हमारे यहाँ तो कुल परम्परा से रात में ही भोजन होता आ रहा है। क्या यहाँ लोग शास्त्र की बात नहीं जानते ?

कमलश्री : जानते हो हैं, पर मानते नहीं है।

सेठानी : (क्रोध भरे स्वर में) बहू, छोटे मुँह बड़ी बात न करो। कान खोलकर सुन लो, यहाँ तुम्हें रात में ही भोजन करना होगा। यही मेरी आज्ञा है।

कमलश्री : सभी मानूँगी मैं आज्ञा नहीं पर प्रण को तोड़ूँगी।
भला खाने के पीछे क्या, प्रतिज्ञा अपनी छोड़ूँगी॥

सेठानी : (रोने के स्वर में) नहीं–नहीं माँ, मुझे मजबूर मत करो। (कमलश्री सास के पैरों में गिर जाती है।)

सेठानी : देखूँ तो कब तक नहीं खाती है। तूने मूझे समझा क्या है ? अभी तक मैं प्यार से समझा रही थी। अब देखना मुझे ....।

(गुस्से में चली जाती है। और रास्ते में बड़गड़ाती जाती है ''मैं इसे दिन में भोजन दूँगी ही नहीं। देखूँ यह रात में कब तक नहीं खाती '') कमलश्री आँखों में आँसू भर भगवान से प्रार्थना करती है।

(पीछे से सूत्रधार की आवाज : सेठानी कमलश्री को दिन में भोजन नहीं देती उधर कमलश्री अपना व्रत नहीं तोड़ती है। इस प्रकार तीन दिन हो जाते हैं। सेठानी व्याकुल हो जाती है।)

सेठानी : ओह, मैं नहीं समझती थी कि बहू ऐसी पक्की निकलेगी। आज तीन दिन हो गए हैं, उसने भोजन नहीं किया। चलूँ हेमदत्त से ही कहूँ। शायद उसके कहने से ही वो मेरी बात मान जाए।

सेठानी : देखा हेम ! तुम्हारी बहू कैसा ढोंग रच रही है ?

Scanned by CamScanner

हेमदत्त : आओ माँ ! क्या कह रही हो ? कैसा ढोंग ?

सेठानी : यही बताने आई हूँ तू उसे समझा दे। वह मेरी बात ही मानकर चले। अपनी-अपनी न चलाए।

हेमदत्त : क्या चला रही है वह अपनी, माँ कुछ सुनाओ तो।

सेठानी : बेटा, परसों जब मैं उसे अपने हाथ से भोजन कराने आई थी तब उसने भोजन नहीं किया। बोली - शास्त्र में रात्रि भोजन त्याग कहा है। मैंने बहुत समझाया पर उसने मेरी एक नहीं मानी।

हेमदत्त : तुमने दिन में उसे खिलाया नहीं ?

सेठानी : नहीं। मैं क्यों खिलाती जब उसने मेरी बात नहीं मानी।

हेमदत्त : (आश्चर्य व दुखित स्वर में) तो वह तीन दिन से निराहार, बिल्कुल भूखी है ? (सेठानी चुप रहती है।)

हेमदत्त : माँ, इतनी कठोरता उचित नहीं है। अभी वह नासमझ है। उसे दिन में ही खिला दिया करो।

सेठानी : (क्रोध भरे स्वर में) दूध पीती बच्ची है वह ? जो कुछ समझती ही नहीं है। वाह बेटा, खूब। तूने भी आखिर बहू जैसी ही कही। मैं तेरे लिए कुछ नहीं हूँ?

हेमदत्त : आप मेरे लिए सब कुछ हैं माँ, परंतु ...

सेठानी : (गरजकर) परंतु वरंतु क्या ? तुझे क्या मालूम मैंने कितनी मुसीबतें उठाकर तुझे पाला-पोसा। बड़ा किया है। जब कहीं बहू आई है और तू बहू पाकर मुझे ही भूल गया है। (सिर पर हाथ मारकर) हाय, तूने भी मेरी बात नहीं सुनी। बहू का ही पक्ष लिया।

हेमदत्त : (विनती भरे स्वर में) माँ घबराओ नहीं। अभी वह जैसा कहे वैसा ही मान जाओ। फिर मैं देखूँगा। देखें कैसे आज्ञा नहीं मानती। मैं उसे सीधा कर दूँगा (क्रोध भरे स्वर में)।

सेठानी : (विवशता भरे स्वर में) अच्छा बेटा, तुम्हारी बात ही मान लेती हूँ।

(दृश्य -3)

हेमदत्त अपने मकान के बाहरी कक्ष में कमर पर दोनों हाथ रखे हुए चिंतित होकर टहल रहा है। उसके मन में अंतरद्वंद्व चल रहा है। वह अपने आप बुदबुदाने लगता है।

हेमदत्त : माँ और मेरी पत्नी में अभी से ही यह मनो मालिन्य उत्पन्न हो गया है। यह अत्यंय ही भयावह स्थिति है। कहीं यह दुःखद न हो जाए। क्या करूँ समझ में नही आता।

(दूर से बीन की आवाज सुनाई देती है। एक सपेरा कंधे पर कामर रखे हुए बीन बजाता सामने आता है।)

सपेरा : कुँवर साहब ! नागों का खेल दिखलाऊँ ? कुछ बीन बजाकर सुनाऊँ ?

हेमदत्त : (क्षण भर सोचकर) अच्छा भाई दिखलाओ खेल। सुनाओ बीन (एक चौकी पर बैठ जाता है।)

(सपेरा बीन बजाता है। कुछ समय तक बीन बजती है। थोड़ी देर पश्चात्।)

सपेरा : मालिक, मैंने इसे विंध्याचल में पकड़ा था। बड़ा जहरीला नाग है। एक बार कहीं डस ले तो आदमी पानी नहीं माँग सकता।

हेमदत्त : (आश्चर्य से) इतना जहरीला !!!

सपेरा : हाँ मालिक, बड़ी मुश्किल से इसे पकड़ पाया हूँ।

हेमदत्त : (कुछ सोचता है और सहसा कुछ निश्चय कर लेता है।) योगी , सुना है सर्प से स्वर्श कराया तले वायु विकार के लाभप्रद होता है।

सपेरा : हाँ, तत्काल लाभ होता है। मेरा अनुभव है मालिक।

हेमदत्त : (दुःख स्वर में) इसी दुःख से तो मेरे घर से सभी

Scanned by CamScanner

परेशान हैं। बहुत सी चिकित्सा करा चुका हूँ परंतु लाभ नहीं हो रहा है। अब क्यों न तुम्हारी ही बात मान लूँ। मैं तुम्हें ये पाँच स्वर्ण मुद्राएँ देता हूँ। मुझे एक विषैला नाग तुम्हीं दे दो। मैं कहाँ नाग ढूँढता फिरूँगा ?

(सपेरा चमचमाती स्वर्ण मुद्राएँ देखकर लालच में आ जाता है।)

सपेरा : अच्छा, मैं एक नाग आपको दिये देता हूँ। इसे संभालकर रखिये। यह बहुत खतरनाक है। किसी को डस न ले।

हेमदत्त : (हर्षित होकर) ठहरो योगी, मैं अभी आया। (हेमदत्त भीतर जाता है और आभूषण रखने की एक सुंदर मंजूषा ले आता है। मंजूषा सपेरे को देते हुए कहता है) लो इसमें रख दो।

(सपेरा मंजूषा में नाग रख हेमदत्त को देता है। सपेरा बीन बजाता हुआ अपनी कामर उठाकर चल देता है।)

(हेमदत्त मंजूषा हाथ लिए हुए घर के भीतर चला जाता है।)

(दृश्य –4)

(स्थान : स्वर्ग, देवराज इंद्र अपनी सभा में सिंहासनासीन हैं। आसपास देवगण बैठे हुए हैं।)

इंद्र : (सहसा चौंककर कह उठते हैं)यह आज मेरा आसन क्यों कंपित हुआ (आँख बंद कर कुछ देर सोचता है) अच्छा यह हो रहा है ? हूँ...

एक देव : क्यों क्या रहस्य है ?

इंद्र : देवराज, अत्यंत भयावह और दुःखद घटना घटने जा रही है। एक पति अपनी नव परिणीता धर्मात्मा पत्नी के प्राण लेने का प्रयत्न कर रहा है।

देव : अवश्य ही भयावह है। जब आप इतने चिंतित हो रहे हैं तब वास्तव में ही दुःखद है।

इंद्र : हाँ, विद्युत्प्रभ ! तुम तुरंत अवंतिका जाओ, यहाँ तुम्हें सब बताने का समय नहीं है। तुम्हें पहुँचते ही घटना का ज्ञान हो जाएगा। तुम शीघ्रता करो, नहीं तो आज से कोई व्रत नियम नहीं पालन करेगा। इसलिए उसकी रक्षा होनी ही चाहिए। जाओ अब उसकी रक्षा करो व धर्म का उद्योत करो।

देव : जो आज्ञा।

(परदा गिर जाता है)

(स्थान : हेमदत्त का कमरा। हेमदत्त लेटा हुआ पुस्तक पढ़ रहा है। कमलश्री प्रमुदित कुछ सकुचाती सी पहुँचकर अभिवादन करती है।)

कमलश्री : प्रणाम प्राणेश्वर !

हेमदत्त : तुम आ गई। मैं तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहा था।

कमलश्री : (प्रसन्न होकर) अहो भाग्य है मेरा, मैं उपस्थित हूँ। अब आज्ञा कीजिये।

हेमदत्त : मैं तुम्हारे लिए एक उपहार लाया हूँ।

कमलश्री : (उत्सुकता से) दिखलाइये, कहाँ है वह सुंदर हार?

हेमदत्त : उस मंजूषा में सुंदर हार है प्रिये, जाओ अपने हाथ से निकालकर पहल लो।

कमलश्री : अपने हाथ से निकालकर पहन लूँ ? नहीं स्वामी, आप उपहार लाए हैं तो आप ही अपने हाथों से मुझे पहना दीजिये।

हेमदत्त : भई मुझे आलस आ रहा है। अब लेटा हुआ हूँ। कौन उठे ? तुम्हीं उठाकर पहिन लो न।

कमलश्री : अच्छा, आप लेटे रहिये, मैं ही पहन लेती हूँ।

(मुस्कुराती हुई मंजूषा हाथ में उठा लेती है और खोलकर हार निकालती है। वह हार बहुत सुंदर है जिसे वह पहले देखती है फिर पहनते हुए कहती है।)

Scanned by CamScanner

कमलश्री : हे स्वामी यह हार तो बहुत ही सुंदर है ऐसा हार तो मैंने आज तक नहीं देखा आपने बहुत ही सुंदर उपहार मुझे दिया है

हेमदत्त : (चौंककर अपने आप बड़बड़ाता है) अरे नाग का हार कैसे बन गया ? यह क्या हो गया ? क्या यह चमत्कार है ? कहीं जादू तो नहीं जानती है यह बड़ी विचित्र स्त्री है। मैं तो तुरा फँस गया।

कमलश्री : (हार पहिनकर आते हुए उदास हेमदत्त को देखकर) आपका मुख मलिन क्यों हो गया है ? क्या हार पहनकर मैं सुंदर नहीं लग रही हूँ ?

हेमदत्त : नहीं–नहीं ऐसी बात नहीं है। तुम्हारा अद्‌भुत रुप देखकर के मैंने तो आश्चर्यचकित हो गया। तुम तो स्वर्ग की देवांगना की तरह लग रही हो।

कमलश्री : (मुस्कुराकर) ऐसा है, इतनी सुंदर लग रही हूँ ? यह सब आपके हार का ही चमत्कार है। प्रियतम, तनिक आप भी तो इसे पहिनकर देखिये। मैं भी देखूँ कि आपको कितना सुंदर प्रतीत होता है ?

(यह कहते हुए अपने गले से हार उतारकर हेमदत्त को देती है। सहसा हार नाग बन जाता है। हेमदत्त नाग को देखकर भयभीत हो जाता है। चीख उठता है। तभी उसे नाग डस लेता है। हेमदत्त आह करता हुआ धरती पर मूर्छित होकर गिर जाता है। नाग अदृश्य हो जाता है।)

कमलश्री : क्या हुआ स्वामी ! तुम्हें क्या हो गया है ? हे भगवान, अचानक ये गजब हो गया ? हे प्रभो, अब मैं क्या करुँ, हाय नाथ, इसी दिन के लिए मुझे ब्याहकर लाए थे। अब मेरी कौन सुनेगा प्रियतम ?

(कमलश्री का विलाप सुनकर हेमदत्त की माँ एवं पिताजी आ जाते हैं)

सेठानी : हाय बेटा, तुझे क्या हो गया ? मुझसे बोल तो सही। मैं तेरी माँ हूँ। हाय मेरे लाल, तू बुढ़ापे में मुझे क्यों दगा दे रहा है ? समझ गई, इस कुलक्षिणी बहू का ही ये काम है। हाय–हाय। अरी डायन, तूने मेरे ही लाल को खा लिया।

कमलश्री : (रोते हूए) हाय, मैं अपने पति की हत्यारिनी हूँ ? हे भगवान मेरा कैसा करम फूटा है ! पति की हत्या का कलंक मुझपर लगाया जा रहा है।

(उसी समय घबराता हुआ सेठ वृषभदत्त आता है।)

सेठजी : हाय मेरे लाल, तू मुझे बुढ़ापे में बेसहारा छोड़कर कहाँ चला गया ? तेरे बिना मैं बेमौत मर गया। मुझे क्या खबर थी कि बहू ऐसे हत्यारिणी होगी ?

कमलश्री : अरे नाथ, तुम चुपचाप ही पड़े रहोगे ? मेरी कुछ भी नहीं सुनोगे। हाय बेदर्दी मुझ पर दया करो, उठो इन्हें समझा दो कि मैं बेकसूर हूँ। मुझे यूँ ही कलंक लगाया जा रहा है।

सेठानी : (रोती हुई चिल्लाकर) अरे हेम के पिताजी, हेम की लाश राज दरबार में ले जाओ। अब वहीं इसका न्याय होगा।

सेठजी : अच्छा, यही ठीक है। राज दरबार में ही लिए जाता हूँ। (नौकर से) ले हेम को पलंग पर लिटा ले और चल राज दरबार ले चलें।

(दोनों हेम को उठाकर पलंग पर लिटाते हैं, और उठाकर चल देते है)

(दृश्य –5)

(स्थान : राज भवन, महाराज एक ऊँचे सिंहासन पर विराजमान हैं दरबार लगा हुआ है। सेठ वृषभदत्त व नौकर पलंग पर हेमदत्त की लाश लिए आते हैं। सेठजी रोते हुए कहते हैं)

Scanned by CamScanner

सेठजी : अरे मेरा बेटा ! हाय मेरे लाल !!

राजा : (सेठजी को व्याकुल देखकर) सेठ साहब, क्या बात है ? ये पलंग पर लाश किसकी है ?

सेठजी : अन्नदाता ! मैं लुट गया, बर्बाद हो गया। यह मेरे बेटे हेमदत्त की लाश है। अब आप न्याय कीजिये।

राजा : क्या बात है सेठजी आप इतने परेशान क्यों दिख रहे हो। आपके ऊपर ऐसी क्या विपत्ती आ गई है। जरा मुझे समझाओ। किसने आपके साथ बुरा व्यवहार किया है। किसी से डरने की कोई जरुरत नहीं है। बताईये सेठजी.....

सेठजी : अन्नदाता ! कल राज कुँवर अपने शयन कक्ष में बिल्कुल भला चंगा सोया था। बहू के अतिरिक्त उसके पास कोई न था। जो कुछ किया, बहू ने किया है।

राजा : (मंत्री से) मंत्रीजी, आप तुरंत ही कुँवर की बहु और सेठानी को बुलाकर शीघ्र लाओ।

मंत्री : जो आज्ञा महाराज।

(कुछ देर में सेठानी व बहू को लेकर मंत्रीजी आते हैं। दोनों ही विकल बेहाल सी आकर खड़ी हो जाती हैं।)

मंत्री : सेठानी ! आपके कुँवर व बहू में परस्पर क्या कोई विवाद था ?

सेठानी : हाँ महाराज !, आपका अनुमान सत्य है।

कवित्त :-

अरे जिस दिन से यह बहू हमारे घर में आई है।
नहीं मैंने घड़ी भर भी कभी भी शांति पाई है ॥

हाय मेरे लाल ....। (रोती है।)

(मंत्री थोड़ी देर तक सेठानी से कुछ पूछता रहता है जो सबको सुनाई नहीं देता, फिर कहता है)

मंत्री : यही संभव है। ठीक कहती हैं आप। मैं महाराज से निवेदन करूँगा कि अपराधिनी को कठोर दंड दिया जाए।

मंत्री : (महाराज से) महाराज ! मैंने इस मामले की तहकीकात कर ली है। बहू ही अपराधिनी है। इसे उचित दंड दिया जाना चाहिए।

महाराज : मंत्रीजी, आपका यह निर्णय मेरी समझ में नहीं आ रहा है। जो जीवहिंसा के भय से रात्रि में भोजन नहीं करती, वह अपने पति की हत्यारिणी कैसे हो सकती है ? यह असंभव है।

मंत्री : मुझे तो यही विश्वास होता है कुँवर को सर्प ने ही काटा है, देखिये इसका शरीर नीला पड़ गया है।

महाराज : पुत्री कमलश्री ! तुम मुझे सब वृत्तांत सुनाओ। मैं तुम्हारी बात सुनकर ही निर्णय करूँगा।

कमलश्री : (रोते हुए) महाराज ! मैं जब कल रात्रि को कुँवर के शयन कक्ष में गई तब वे बोले, मैं तुम्हारे लिए एक हार लाया हूँ। उस मंजूषा में रखा है। पहन लो। मैंने पहना। तब तो वो हार ही था। मैंने अपने गले से निकालकर हार उनके हाथों में दिया तो हार भयंकर नाग बन गया। न जाने क्या माया हुई। शायद उसी ने इनको डस लिया। मैं निर्दोष हूँ। महाराज, मैंने कुछ नहीं किया (रोने लगती है।)

महाराज : ठीक है बेटी, मैं कल निर्णय करूँगा (मंत्री से) मंत्रीजी, तुरंत नगर के सब सपेरों को बुलवाओ। मैं कुछ जाँच करना चाहता हूँ।

मंत्री : जो आज्ञा महाराज।

(मुनादी : हुकुम महाराज का है, नगर के सभी सपेरे कल राज दरबार में आकर हाजिर हों।)

Scanned by CamScanner

(दृश्य –6)

(अगले दिन राज दरबार में सपेरे आते हैं)

सपेरे : अन्नदाता की जय हो। जय हो। महाराज की जय हो जय हो। अन्नदाता, हम सब हाजिस हैं।

महाराज : (कुछ तेज स्वर में) योगियो, मैं तुमसे जो भी पूछता हूँ सही–सही बतलाना। बतलाओं, तुममें से किसी ने किसी नागरिक को सौंप दिया है ?

सपेरा : (हाथ जोड़कर) हाँ महाराज, मैंने कल एक सेठ के कुँवर को भयंकर सर्प दिया था।

महाराज : क्या तुम उस कुँवर को पहचान सकते हो ?

सपेरा : हाँ अन्नदाता, मैं उस कुँवर को पहचान लूँगा।

महाराज : तो देखो, उस पलंग पर एक कुँवर पड़ा है। क्या यही था वह ?

सपेरा : (पलंग के पास जाता है, चौंककर) हाँ अन्नदाता, इसी कुँवर को मैंने सर्प दिया था।

महाराज : क्यों दिया था ? क्या तुम्हें नहीं पता सर्प जैसा भयंकर प्रणघातक जीव किसी अनजान नागरिक को देना कितना बड़ा अपराध है ?

सपेरा : अन्नदाता, इसने मुझसे कहा कि मेरी घर वाली वायु के दर्द से मरी जा रही है। मुझे क्या मालूम था कि वह स्वयं ही अपने प्राणों को खो देगा। मैं निर्दोष हूँ मालिक।

महाराज : (मंत्री से) मंत्रीजी, देखा आपने ? यह सब कुँवर की चाल थी। घर का झगड़ा निपटाने के लिए वह बहू को ही समाप्त करना चाहता था।

महाराज : (कमलश्री से) बेटी तुम निर्दोष व सच्ची हो। मैं तुम्हें अपराधमुक्त करता हूँ। और मैं तुमसे प्रार्थना

करता हूँ कि तुम अपने सतीत्व के प्रभाव से इस कुँवर को अब जीवनदान दो।

कमलश्री : महाराज, मैं आपकी इसी कृपा से अत्यंत कृजज्ञ हूँ। पर मैं इन्हें कैसे जीवन दान दूँ ? मैं तो कुछ हीं जानती पर आपकी आज्ञा को मैं कैसे टाल सकती हूँ?

(कमलश्री कुँवर की लाश के पास घुटनों के बल बैठकर हाथ जोड़कर प्रार्थना करती है)

सुनो अरदास दीनानाथ, मुझ पर है विपद भारी।
करो मत देर अब भगवन, कि मेरी आ गई बारी ॥
तुम्हारा नाम लेते ही, सभी संकट नशाते हैं।
बनाते हो तुम्हीं बिगड़ी, तुम्हीं हो नाथ भयहारी ॥

कमलश्री : महाराज ! मुझे थोड़ा सा पवित्र जल मँगवा दीजिये।

महाराज : मंत्रीजी, शीघ्र ही पवित्र जल मँगवाइये।

मंत्री : महाराज, मैं स्वयं लिए आता हूँ।

(मंत्रीजी शीघ्र जाकर जल ले आते हैं और कलश हाथ में लेकर कमलश्री भक्तामर का काव्य या णमोकार मंत्र और चत्तारि दण्डक जोर–जोर से पढ़ती है।) पढ़कर हेमदत्त के ऊपर जल छिड़कती है। सहसा हेमदत्त आँखों खोल देता है।

मेहदत्त : ऐं.... मैं कहाँ हूँ... (उठकर खड़ा हो जाता है।)

कमलश्री : (हर्ष से जोर से) जिनेन्द्र भगवान की जय।

सारा राज दरबार: सारा राज दरबार जिनेन्द्र भगवान की जय।

महाराज : कमलश्री :–

कवित्त :–

तुम्हीं हो धन्य हे बेटी, व्रती हो भक्त हो भारी।
जगत में धन्य है सचमुच, तुम्हारे बाप महतारी ॥
खुशी हूँ धर्म तेरा सत्य, ये मैं मान लेता हूँ।
तुम्हें मैं आज नारी रत्न का सम्मान देता हूँ ॥

सब लोग : नारी रत्न कमल श्री की जयजयकार करते हैं।

Scanned by CamScanner

कमलश्री : अच्छा महाराज ! मुझे आज्ञा दीजिये। प्रणाम। मैं अब जा रही हूँ।

महाराज : सदा सुखी रहो पुत्री।

(कमलश्री राज दरबार से बाहर हो जाती है। सब लोग खड़े-खड़े देखते रह जाते हैं।)

(दृश्य -7)

(कमलश्री नीचा सिर किये हुए आगे चली जा रही है। पीछे से सेठ वृषभदत्त, हेमदत्त व सेठानी आ रहे हैं।)

सेठजी : बहू, अपने भवन का पथ इधर है। उधर कहाँ जा रही हो बेटी ?

कमलश्री : नहीं पिताजी ! मैं अब आपके भवन में नहीं जा रही हूँ। मैं भवन छोड़कर वन में जा रही हूँ। वहाँ जाकर आर्यिका बनूँगी।

सेठानी : (आगे बढ़कर कमलश्री का हाथ पकड़ लेती है।) बहू, मुझे माफ कर दो। मुझसे बड़ी भूल हुई है। मैंने तुम पर झूठा आरोप लगाया है। अब घर चलो। घर की शोभा बढ़ाओं। मेरे बुढ़ापे की ओर देखो।

कमलश्री : माँ आप मुझे। क्षमा कर दें। अब मैं घर नहीं चलूँगी। यह शरीर नाशवन है। आज नहीं तो कल नष्ट हो जाएगा।

(कमलश्री विनयपूर्वक सास से हाथ छुड़ाकर आगे बढ़ती है। तभी हेमदत्त आगे बढ़कर उसके सामने खड़ा हो जाता है।)

हेमदत्त : कमलश्री अपने घर चलो।

कमलश्री : नहीं स्वामी, अब मेरा प्रणाम लो। (अपने सास ससुर से) अच्छा आप भी मुझे क्षमा कर दें।

(यहाँ चाहें तो आर्यिका दीक्षा लेने का दृश्य भी दिखा सकते हैं।)

समाप्त

नाटक (4)

दहेज

नरक का दृश्य :

वर का पिता : इतना सा दहेज देकर आप मेरा अपमान कर रहे हैं। बारात में बड़े-बड़े आदमी आए हुए हैं। उनके सामने आप मेरी नाक काट रहे है।

कन्या का पिता : इसमें आपका अपमान क्या है ? इससे तो सिर्फ मेरी गरीबी साबित होती है। मेरी गरीबी से मेरा अपमान होगा, आपका अपमान क्यों होगा ?

वर का पिता : क्यों न होगा ? मैंने अपने लड़के की शादी एक भुक्खड़ कंगाल भिखारी से की है, यह क्या मेरा कम अपमान है ?

कन्या का पिता : जबान संभालकर बोलिये। भुक्खड़ कंगाल हूँ तो अपने घर का हूँ। आपके घर भीख माँगने आऊँ तो मत दीजियेगा। अभी तो भुक्खड़ कंगाल आप ही दिखाई दे रहे हैं जो भीख माँगने मेरे द्वार पर खड़े हैं।

वर का पिता : (क्रोध से होंठ चबाते हुए) हम भिखारी हैं ! आपके द्वारा सौ बार नाक रगड़ने पर हम यहाँ आए हैं। नहीं चाहिए मुझे भुक्खड़ की लड़की।

कन्या का पिता : तो चले जाओ। ऐसे भिखारी के घर में हमें भी लड़की नहीं देना। मैंने भले घर में लड़की की

Scanned by CamScanner

शादी करने के लिए बुलाया था, अपना घर लुटाने के लिए और भिखारियों के घर में लड़की का जीवन बर्बाद करने के लिए नहीं।

वर का पिता : लड़की के साथ लड़की का हिस्सा नहीं दोगे ?

कन्या का पिता : लड़की को पाल-पोस कर इतना बड़ा कर दिया और जिंदगी भर दूसरो की सेवा के लिए सौंप दिया। अब हिस्सा किस बात का ?

वर का पिता : तो लड़की को बेच क्यों न दिया ?

कन्या का पिता : मैं आपके समान नीच नहीं हूँ कि संतान के दाम वसूल करता फिरूँ।

वर का पिता : (चिल्लाकर) मैं नीच हूँ। अच्छा देखूँगा अब तुम्हारी लड़की के साथ कौन शादी करता है। (वर से) चल रे चल ! ऐसे असभ्य भुक्खड़ के यहाँ शादी नहीं करना है।

(इसके बाद वर पक्ष के लोग कन्या पक्ष को गलियाँ देने लगे। कन्या पक्ष वाले वर पक्ष को गालियाँ देने लगे। कोई वर को खींचने लगे, कोई वर को पकड़ने लगे। नरक का तांडव होने लगा।)

स्वर्ग का दृश्य :

(कन्या के पिता द्वारा जा रहा बहुमूल्य दहेज देखकर)

वर का पिता : यह क्या करते हैं आप ! आपने लड़की का पालन-पोषण करके हमारा घर बसा दिया, यही कृपा क्या कम है आपकी ? फिर इस दहेज की क्य जरुरत है ?

कन्या का पिता : दहेज मैं कहाँ दे रहा हूँ ? यह तो सम्मान के लिए पत्र-पुष्प है।

वर का पिता : आपने आदर सहित खिलाने-पिलाने और

ठहराने आदि की व्यवस्था की, यही क्या कम है ? सच पूछा जाए तो आप पर इतना बोझ डालना भी अन्याय है। दूसरों का घर बसाने के लिए आपने जो अठारह वर्ष तक कन्या का पालन-पोषण किया यह निःस्वार्थ परोपकार की इतना महान है कि आप स्वयं पूज्य हैं। आप पर खिलाने-पिलाने का बोझ डालना भी अन्याय है। फिर अगर कुछ भेंट लूँगा तो मुझे पाप में ही डूबना पड़ेगा।

कन्या का पिता : इसमें पाप की क्या बात है? पाँच-सात आदमियों की ही तो आप बारात लाए है। उनके ठहरने, खाने-पीने का खर्च ही कितना? लोग तो सौ सौ दो दो सौ आदमियों की बारात लाते है।

वर का पिता : लोग उपकारी पर अत्याचार करके नरक में जाते हैं तो मैं क्यों जाऊँ ? बारात में दूल्हा सहित पाँच व्यक्तियों से अधिक होना ही नहीं चाहिए। दो आदमी ज्यादा आ गए इसी का मुझे खेद है। अब मैं किसी तरह की भेंट या दहेज नहीं लूँगा।

कन्या का पिता : पिता के धन में यदि लड़को का हक है तो थोड़ा-बहुत लड़कियों का भी है। लड़की धनहीन क्यों रहे ?

वर का पिता : यह ठीक है। लड़की को धनहीन कदापि न रहना चाहिए। पर इसकी जिम्मेदारी कन्या के पिता पर नहीं, वर के पिता पर है। जिस घर में स्त्री कर्तव्य करती है उसी घर में उसका अधिकार है और पूरा अधिकार है, स्वतंत्र अधिकार है। सो जो आभूषण मैं साथ में लाया हूँ उस पर कन्या का पूरा अधिकार है। इसके सिवाय स्त्री

Scanned by CamScanner

धन पत्रिका में जो भरा जाता है उस पर उसका पूरा अधिकार है। इसके सिवाय घर खर्च से बचने पर आमदनी में से भी थोड़ा-बहुत हिस्सा उसे मिलता ही रहेगा। उस पर उसका पूरा अधिकार होगा। लड़के को जैसा मिलता है वैसा लड़की को भी मिलना चाहिये वर पक्ष से, उसकी अपनी ससुराल से।

कन्या का पिता : आपकी विद्वत्ता के आगे मेरी बोलती ही बंद है। पर बारातियों को रुपया-नारियल से टीका तो करने दीजिये। उन्होंने इतना समय दिया, यात्रा का कष्ट उठाया, उसका बदला तो नहीं चुकाया जा सकता है, पर सम्मान के लिए रुपया-नारियल देना जरुरी है।

वर का पिता : जरुरी है तो वह मेरे लिए है। आपके लिए नहीं। बारात में जो लोग आए हैं उनका उपकार मुझ पर है, आप पर नहीं। आपके यहाँ जो मेहमान आए हैं उनका उपकार आप पर है और मेरे यहाँ जो मेहमान आए हैं उनका उपकार मुझ पर है। उन्हें भेंट देना होगा तो मैं दे दूँगा। अथवा काम पड़ने पर उनके यहाँ जाकर प्रत्युपकार कर दूँगा। यों पहले मैं उनके यहाँ जाकर ऐसा उपकार कर भी चुका हूँ। इस प्रकार के परस्पर सहयोग का मेहनताना नहीं चुकाया जा सकता।

कन्या का पिता : तर्क में आपको जीतना मुझे क्या बृहस्पति को भी कठिन है। पर मेरे चाहे अंध संस्कार कहिये, मुझे ऐसा लगता है कि सम्मान के रुप में वर को तथा अन्य बारातियों को कुछ न कुछ देना ही चाहिए।

वर का पिता : ठीक है, तो आप अपना हठ पूरा कीजिये। बारातियों को रुपया तो न दीजिये, क्योंकि रुपया माप-तोल की चीज है। एक-एक नारियल या कोई फल दे दीजिए। वर जब आपको प्रणाम करे तब आप वात्सल्य प्रदर्शन के लिए कोई कपड़ा या पुस्तक आदि चीज दे सकते हैं। हाँ! वह बहुमूल्य नहीं होना चाहिये। आपके उपकारों के बोझ हम यों भी दबे हुए हैं और अधिक बोझ उठाने की हिम्मत हममें नहीं है।

इस प्रकार दहेज और भेंटें ठुकराई जा रही थी और स्वर्ग का नृत्य हो रहा था।

समाप्त

Scanned by CamScanner

नाटक (5)

प्रेम विवाह

नरक का दृश्य :

पत्नि : प्रेम विवाह करने की मूर्खता से दुनिया ही उलट गई।

पति : किसकी दुनिया उलट गई ? तुम्हारी या मेरी ?

पत्नि : तुम्हारी क्या उलट गई ? कुटुम्ब छूटा मेरा, बंधन में पड़ी मैं, पोजीशन गिरी मेरी। शादी के बाद तो तुम्हारी आँखें ही बदल गई। रुख ही बदल गया।

पति : क्या आँखें बदली ?

पत्नि : क्या नहीं बदला ? विवाह के पहले तुम मेरा जितना आदर करते थे, जितना प्रेम बताते थे, उसका शतांश भी है अब ? छोटे-छोटे कामों के लिए हुक्म चलाना और आँखें दिखाना सीख गए हो। पहले मेरे इशारे पर नाचा करते थे, अब मुझे ही इशारे पर नचाना चाहते हो।

पति : तो क्या करूँ ? जिंदगी भर तुम्हारे इशारे पर नाचा करूँ ?

पत्नि : जो काम जिंदगी भर नहीं कर सकते थे उसका ढोंग चार दिन के लिए क्यों किया था ? झूठे ढोंग में मुझे क्यों फँसाया था ?

पति : झूठा ढोंग मेरा ही था ? क्या तुम्हारा नहीं था ? कहाँ गया वह आदर सत्कार ? कहाँ गया वह सेवा भाव ? कहाँ गई वह मुस्कुराहट ? कहाँ गया वह कटाक्ष ? सब तो खत्म हो गया। अब तो मैं कमाकर लाने का और बोझा ढोने को एक बैल की तरह रह गया हूँ।

पत्नि : बैल तो इतने ही अर्थ में ही कि सांड की तरह गरजते हो और किसी की कोई परवाह नहीं करते। बाकी पद-पद पर

तुम्हारे व्यवहार से ऐसा घमंड और लापरवाही टपकती है जैसी नौकरों-चाकरों की तरफ भी नहीं दिखाई जाती। अब जीवन में मुस्कुराहट रह ही कहाँ गई है जो दिखाई दे। मेरा जीवन तो तुमने धीरे-धीरे झुलसा ही दिया है।

पति : ऐसी क्या आग लगा दी मैंने ? जिससे तुम्हारा जीवन झुलस गया ?

पत्नि : क्या नहीं लगा दी ! इस विवाह से मेरे घर-परिवार वाले सब नाराज हो गए। मेरी इस असहाय दशा का तुम और तुम्हारे घर वाले खूब दुरुपयोग करते हो, मेरा गौरव नष्ट करते हो। आज मैं एक-एक पैसे को मोहताज हूँ। चिंदी-चिंदी को तरसती हूँ। जानवरों की तरह रुखा-सूखा खाती हूँ और सबसे बुरी बात तो यह है कि शील के बारे में भी तुम ईमानदार नहीं हो, न जाने कहाँ-कहाँ मुँह मारते रहते हो।

पति : अच्छा तो मैं बेवफा भी हूँ। और जानवर भी हूँ। ठीक है, मैं ऐसा ही हूँ। अब तुम्हें जो करना हो सो कर लो।

पत्नि : जानवर तो मैं बन ही चुकी हूँ। अब बेवफा भी बनना ही पड़ेगा।

पति : क्या मुझे तलाक दोगी ?

पत्नि : वह तो भाग्य में बदा ही है। पर उसके पहले अब तुम्हें भी अपनी करनी का फल भोगना पड़ेगा।

पति : तो तुम मेरी जिंदगी बर्बाद करोगी।

पत्नि : जब तुम मेरी जिंदगी में ही आग लगा चुके हो, तब क्या उस आग की थोड़ी भी सेंक तुम्हें न लगेगी ? तुमने मेरी पीहर उजाड़ दिया और इस घर में आग लगा दी। अब जलने के सिवाय और कोई रास्ता नहीं है। सो जलूँगी, खूब जलूँगी। इतना जलूँगी कि उसकी लपटो में जलाने वाले भी जल जाएँ।

(यह कहती हुई वह अपने बाल नोचती हुई चीखती-

Scanned by CamScanner

चिल्लाती कमरे से बाहर चली जाती है।)

पति : हे भगवान ! प्रेम विवाह का क्या यही परिणाम निकलता है ? (पति सिर पीटता हुआ जमीन पर धप से गिर पड़ता है।)

स्वर्ग का दृश्य :

पत्नि : (पति को चिंता में बैठा हुआ देखकर बड़े स्नेह से कंधे पर हाथ रखते हुए) किस विचार में खोए हो आज ?

पति : कुछ नहीं, यों ही तुम्हारे बारे में कुछ विचार मन में आ गए।

पत्नि : क्या विचार ?

पति : यही कि तुम्हें मेरे लिए कितना त्याग करना पड़ा ? तुम्हारे माता-पिता आदि छूट गए। मेरी आर्थिक अवस्था ठीक नहीं होने से विवाह के समय ठीक से गहने और कपड़े तक न ले सका। स्त्री धन की कोई व्यवस्था तक न कर सका।

पत्नि : पर तुम्हीं तो मेरे स्त्री धन हो। मुझे और स्त्री-धन की क्या जरुरत है ?

पति : सो तो हूँ ही, पर जैसी गरीबी में जैसा श्रमिक जीवन तुम्हें बिताना पड़ रहा है और विवाह के पहले जैसा वैभवमय जीवन तुम्हारा था, उस पर विचार कर मुझे बड़ा खेद होता है। ऐसा लगता है कि मेरे द्वारा यह प्यार का अत्याचार हो गया है।

पत्नि : प्यार तो अत्याचार करता ही है पर अत्याचार होता है मीठा। क्योंकि आनंद तो प्यार में ही होता है। बाहरी वैभव के विलास में नहीं। जिसे तुम श्रमिकता कहते हो वह तो प्यार कारण आनंद का खेल बन गई है।

पति : आनंद का खेल ?

पत्नि : हाँ ! आनंद का खेल। जब मैं बर्तन मलती हूँ और मेरे मना करने पर भी तुम बर्तन मलने में मदद करने बैठ जाते हो,

मेरे किसी भी काम में जब तुम साझीदार बन जाते हो, तब काम का कष्ट भूल जाती हूँ और सहयोग का मजा मिलने लगता है। ऐसी हालत में काम का श्रम कैसे रह जाएगा ? वह तो खेल बन जाएगा।

पति : और तुम भी मेरे काम में मदद करने लगती हो सो ?

पत्नि : पर तुम्हारे ऊपर दया करके नहीं, सहयोग का मजा लूटने के लिए। जिंदगी में जिन्हें खेल कहते हैं वे आखिर हैं क्या? सहयोग का मजा लूटने के लिए किये गये श्रम ही तो हैं। लोग निरर्थक ही केवल खेलों को ही खेल कहते हैं हम तो सार्थक सहयोग को भी खेल अपेक्षा उसका दर्जा बढ़ जाता है। क्योंकि उसकी उपयोगिता बढ़ जाती है। आनंद बढ़ जाता है, परस्पर आत्मीयता बढ़ जाती है।

पति : तुम तो बड़ी दार्शनिक बन गई रानी !

पत्नि : जब तुम मेरी छाया पड़ने से मजदूर बन गए तब क्या तुम्हारी छाया पड़ने से मैं दार्शनिक न बन जाऊँगी ?

पति : तुम्हारी छाया पड़ने से मैं मजदूर क्यों बनूँगा ? तुम तो रसमय हो इसलिए रसिक बनूँगा।

पत्नी : रसिक तुम बनोगे तो क्या, तुम तो जन्मजात रसिक ही हो। लोग रसिकता में केवल कामिनी का श्रृंगार करने लगते हैं। पर तुम तो पत्नि के काम में हाथ बँटाकर सब कामों को रसमय बना देते हो।

पति : फिर भी अनुभव करता हूँ कि तुम्हारी क्षतिपूर्ति नहीं कर पा रहा हूँ। इस विवाह से तुम्हारे पीहर का संबंध टूट गया। इसका मुझे बड़ा खेद है। एक तरह से तुम कुटुम्बहीन हो गई हो।

पत्नि : यह तो समाज का विधान ही है कि लड़की कुटुम्ब ही छूटता है इसमें कुटुम्बहीनता का सवाल कहाँ है ? पत्नि के लिए सारी कौटुम्बिकताओं का निचोड़ तो पति ही है।

Scanned by CamScanner

पति : और पति के लिए सारी कौटुम्बिकताओं का निचोड़ पत्नि है।

पत्नि : यह भी ठीक कहा तुमने। ऐसी हालत में आपने लिए कुटुम्बहीनता का सवाल है ही नहीं। हाँ ! माता-पिता की नाराजी है, पर वह क्षणिक है और उनके स्नेह का परिणाम है।

पति : क्या तुम्हें आशा है कि उनकी नाराजी चली जाएगी ?

पत्नि : अपने आप तो न जाएगी, परंतु जब अपना सफल सुखमय जीवन वे देखेंगे, तब उनकी नाराजी का कारण दूर हो जाएगा। उनकी नाराजी का कारण यह भ्रम है कि उनकी इच्छा न मानकर हम दोनों ने अपनी इच्छा से विवाह कर अपना जीवन बर्बाद कर लिया है। बड़े परिश्रम से पाली-पोसी गई संतान स्नेह की बर्बादी की कल्पना से उनका नाराज होना स्वाभाविक है। इसके मूल में उनका संतान स्नेह ही है। पर जब वे अपना सुखी संसार देखेंगे, और इस सफल जीवन को लेकर जब मैं उनकी सेवा में उपस्थित होकर उनके चरणों पर अपना मस्तक धर दूँगी तब उनकी सारी नाराजी मिट जाएगी।

पति : बहुत सुंदर योजना है रानी तुम्हारी। अब तो हमें यह कोशिश करना है कि अपना जीवन जल्दी सफल हो !

पत्नि : जीवन तो सफल है ही, सिर्फ उन्हें दिखाने का ही काम बाकी है।

पति : पर अपने पास दिखाने लायक क्या है ? अपनी वैभवहीन अवस्था का तो तुम्हें पता ही है।

पत्नि ने मुस्कराते हुए कहा : हूँ ! वैभव क्या दिखाने की चीज है ? अपने पास है अनंत प्रेम, अटूट विश्वास और अखंड सहयोग। जो वैभवशालियों को भी दुर्लभ है और देवताओं को भी दुर्लभ है।

Scanned by CamScanner

नियम का फल

प्रकाशक

ज्ञान कुटी साहित्य केन्द्र

ज्ञान कुटी, सिद्धनगर, पुरवा

जबलपुर (म.प्र.)

फोन: 0761-2671655, 09425129377

Scanned by CamScanner